टिप्पणियाँ

318hi25

25

राष्ट्रीय आय और इसका मापन

पिछले पाठ में आपने राष्ट्रीय आय से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं और इससे संबंधित समुच्चयों के विषय में पढ़ा है। इन अवधारणाओं की जानकारी राष्ट्रीय आय को मापने में आवश्यक है।

इस पाठ में आप सीखेंगे कि राष्ट्रीय आय की गणना कैसे की जाती है। पाठ–24 में आपने पढ़ा है कि राष्ट्रीय आय एक प्रवाह है। इस प्रवाह को तीन भिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। अतः राष्ट्रीय आय के मापन की तीन विधियां हैं। इस पाठ में इन तीनों विधियों की विस्तृत व्याख्या की गई हैं।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- राष्ट्रीय आय की परिभाषा दे पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय पर तीन भिन्न दृष्टिकोणों से विचार कर पाएंगे;
- किसी देश के आर्थिक क्षेत्र में स्थित उत्पादन इकाइयों का विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रकों में वर्गीकरण की व्याख्या कर पाएंगे;
- प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रकों के अर्थों की व्याख्या कर पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय गणना की उत्पादन विधि (मूल्य वृद्धि विधि) की व्याख्या कर पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय गणना की उत्पादन विधि का प्रयोग करने में आवश्यक सावधानियों को समझ पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय गणना की आय वितरण को विधि समझ पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय गणना की आय वितरण विधि में आवश्यक सावधानियां समझ पाएंगे;
- राष्ट्रीय आय गणना की अंतिम व्यय विधि को समझ पाएंगे;

- राष्ट्रीय आय गणना की अंतिम व्यय विधि में आवश्यक सावधानियों को समझ पाएंगे;
- ये दिखा पाएंगे कि राष्ट्रीय आय गणना की प्रत्येक विधि के एक ही परिणाम देती है; तथा
- निजी आय, व्यक्तिगत आय, व्यक्तिगत प्रायोज्य आय और सकल तथा निवल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय की गणना कर पाएंगे।

25.1 राष्ट्रीय आय गणना की विधियां

उत्पादन इकाइयां वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करती हैं। इस कार्य के लिए वे उत्पादन के चार कारकों को नियोजित करती हैं। ये कारक हैं–श्रम, भूमि, पूंजी और उद्यम। इन उत्पादन साधनों द्वारा मिलकर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं अर्थात् वर्तमान वस्तुओं में मूल्य वृद्धि करते हैं। यह मूल्य वृद्धि अर्थात् निवल घरेलू उत्पाद, चारों साधनों के बीच उनके प्रतिफलों के रूप में बंट जाता है–लगान, ब्याज और लाभ, कर्मचारियों का पारिश्रमिक में साधनों को उत्पादन में योगदान के बदले दिए जाते हैं। उत्पादन साधनों के स्वामी इस प्रकार मिली आय को उत्पादक इकाइयों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं उपभोग और निवेश के उद्देश्य, से क्रय पर व्यय कर देते हैं। संक्षेप में, उत्पादन से आय का सृजन होता है। आय को व्यय के लिए उपयोग होता है तथा और आगे उत्पादन में सहायक होता है। राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह की तीन अवस्थाएं हैं। इनके अनुरूप राष्ट्रीय आय के आकलन की तीन विधियां हैं। ये हैं–

(क) मूल्य वृद्धि या उत्पादन विधि

(ख) आय विधि

(ग) व्यय विधि

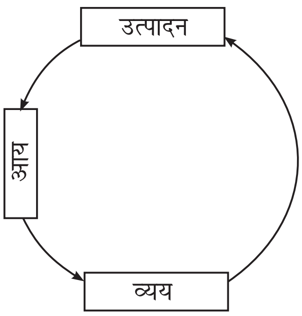

चित्र 25.1: राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह की तीन अवस्थाएं

25.2 मूल्य वृद्धि विधि

इस विधि से उत्पादन स्तर पर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है। उत्पादन स्तर पर किसी देश की राष्ट्रीय आय घरेलू सीमा में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य और विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय का योग होती है। इस विधि में निम्नलिखित चरण हैं–

प्रथम : अर्थव्यवस्था के सभी उत्पादक उपक्रमों को उनकी गतिविधियों के अनुरूप निम्न तीन वर्गों में विभाजित कर दिया जाता है। ये हैं–

प्राथमिक क्षेत्रक : इस क्षेत्रक में वे उत्पादक इकाइयां आती हैं, जो मुख्यतः प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन–प्रसंस्करण के कार्य करती हैं। इनमें कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन, खनन आदि उत्पादक गतिविधियां सम्मिलित हैं।

द्वितीयक क्षेत्रक : इस क्षेत्रक में उन उत्पादक इकाइयों को शामिल किया जाता है, जो आगतों को निर्गत में परिवर्तित करती है। उदाहरणतः लकड़ी का कुर्सी के रूप में परिवर्तन। इसमें विनिर्माण, निर्माण, विद्युत, गैस और जल आपूर्ति जैसे उपक्षेत्रक आते हैं।

तृतीयक क्षेत्रक : इस क्षेत्रक की उत्पादक इकाइयों में सभी प्रकार की सेवाओं का उत्पादन होता है, जैसे कि व्यापार–वाणिज्य, बैंकिंग, परिवहन आदि। इसे सेवा क्षेत्रक के नाम से भी जाना जाता है। परिवहन, संचार, बैंकिंग सेवा आदि सभी इस क्षेत्रक के घटक हैं।

दूसरे : अर्थव्यवस्था की प्रत्येक उत्पादक इकाई में सकल उत्पादन का मूल्य की गणना उसके उत्पादन की इकाइयों को कीमत से गुणा करके ज्ञात किया जाता है। इस सकल उत्पादन मूल्य में से (i) मध्यवर्ती उपभोग (ii) मूल्य ह्रास (Dep) और (iii) निवल अप्रत्यक्ष करों (NIT) की राशियां घटाकर हमें उन उत्पादक इकाइयों द्वारा की गई साधन लागत (FC) पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA) का अनुमान प्राप्त होता है–

या–

साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि = उत्पादन का सकल मूल्य मध्यवर्ती उपभोग – मूल्य ह्रास – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर।

एक क्षेत्रक की सभी उत्पादक इकाइयों द्वारा की गई निवल मूल्य वृद्धियों का योगफल उस क्षेत्रक द्वारा साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि का अनुमान प्रदान करता है। अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रकों के इस प्रकार के अनुमानों का योग साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद के बराबर होता है।

तीसरे : साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद में विदेशों से निवल साधन आय जोड़कर हमें साधन लागत या निवल राष्ट्रीय उत्पाद प्राप्त होता है।

यदि विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय ऋणात्मक हो तो साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद साधन लागत पर राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक होगी और यदि ये धनात्मक है तो राष्ट्रीय उत्पाद घरेलू उत्पाद से अधिक होगा।

उत्पादन के मूल्य से राष्ट्रीय आय तक (उत्पाद विधि/ मूल्य वृद्धि)

मध्यवर्ती उपभोग				
अचल पूंजी उपभोग	अंचल पूंजी उपभोग			
निवल अप्रत्यक्ष कर NIT	NIT	NIT		विदेशों से निवल साधन आय
तृतीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	तृतीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	तृतीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	तृतीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	NDP_{FC} = कर्मचारियों का पारिश्रमिक
द्वितीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	द्वितीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	द्वितीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	द्वितीयक क्षेत्रक में NVA_{FC}	+ लगान + ब्याज + लाभ + मिश्रित
प्राथमिक क्षेत्रक में NVA_{FC}	प्राथमिक क्षेत्रक में NVA_{FC}	प्राथमिक क्षेत्रक में NVA_{FC}	प्राथमिक क्षेत्रक में NVA_{FC}	आय बाजार कीमत पर NNP_{FC}
सकल उत्पाद का मूल्य	GDP_{FC}	NDP_{FC}	NDP_{FC}	(राष्ट्रीय आय)

संख्यात्मक उदाहरण

1. निम्नलिखित से साधन लागत पर सकल मूल्य वृद्धि की गणना कीजिए–

(i)	बाजार मूल्य पर सकल उत्पादन मूल्य	10,500 रुपये
(ii)	मूल्य ह्रास	1,000 रुपये
(iii)	अप्रत्यक्ष कर	750 रुपये
(iv)	आर्थिक अनुदान	200 रुपये
(v)	मध्यवर्ती उपभोग	4000 रुपये
(vi)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	2000 रुपये

हल:

साधन लागत पर सकल मूल्य वृद्धि की गणना निम्न प्रकार की जाएगी–

बाजार कीमत पर सकल उत्पादन मूल्य	= 10,500 रुपये
+ आर्थिक अनुदान	= +200 रुपये
– मध्यवर्ती अनुदान	= –4000 रुपये
– अप्रत्यक्ष कर	= –750 रुपये
	रुपये 5950

पाठगत प्रश्न 25.1

नीचे दिए गए संकेतों से वाक्यांशों/शब्दों का प्रयोग कर रिक्त स्थानों को भरें : (प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक, औद्योगिक क्षेत्रक, स्वउपभोग हेतु उत्पादन का मूल्य)

(i) मत्स्य पालन .... का घटक है।

(ii) मूल्य वृद्धि विधि से राष्ट्रीय आय के आकलन में पहला कदम विभिन्न आर्थिक गतिविधियों पहचान तथा उनको उनकी प्रकृति के अनुसार अलग-अलग .... में वर्गीकरण करना है।

(iii) .... उत्पादन के मूल्य के आकलन में सम्मिलित करना चाहिए।

(iv) परिवहन .... क्षेत्रक का भाग है।

सावधानियां

उत्पादन विधि से राष्ट्रीय आय की गणना में निम्न सावधानियां आवश्यक हैं–

(i) स्वउपभोग के लिए उत्पादन : उत्पादन का जो अंश उत्पादक स्वयं उपभोग कर लेते हैं और जिसका मूल्यांकन हो सकता है। वह भी चालू वर्ष के उत्पादन का हिस्सा है। उसे उत्पाद में शामिल करना चाहिए।

(ii) पुरानी वस्तुओं की बिक्री : पहले इस्तेमाल में आई पुरानी चीजों की बिक्री वर्तमान राष्ट्रीय में शामिल नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि वे पूर्व वर्ष के उत्पादन में जोड़ी जा चुकी हैं।

(iii) दलालों को पुरानी चीजों की खरीद-बिक्री पर दिया गया कमीशन राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाना चाहिए, क्योंकि उनकी सेवा के बदले चालू वर्ष में भुगतान किया जा रहा है।

(iv) मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को नहीं जोड़ना चाहिए, क्योंकि इससे दोहरी गणना हो जाएगी।

(v) गृहणियों की सेवाओं को शामिल नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि उनका मूल्यांकन कर पाना बहुत ही कठिन है।

25.3 आय विधि

वितरण के स्तर पर राष्ट्रीय आय को मापने के लिए आय विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अनुसार, वर्ष भर में सभी उत्पादक साधनों द्वारा अपनी सेवाओं के माध्यम से अर्जित आय का योग कर राष्ट्रीय आय की गणना की जाती है।

(i) सबसे पहले : उत्पादक इकाइयों को प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में वर्गीकृत करें। यह वर्गीकरण मूल्य वृद्धि विधि के समान होता है।

(ii) दूसरे : प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्रक में निम्न उत्पादक इकाइयों द्वारा व्यय की गई साधन आय के भुगतान का आकलन करें–

(i) कर्मचारियों का पारिश्रमिक

(ii) लगान

(iii) ब्याज

(iv) लाभ

(v) स्वनियोजितों की मिश्रित आय।

इन सभी भुगतान किए गए साधन आय का योग औद्योगिक क्षेत्रकों द्वारा की गई साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि के समान होती है।

तीसरे : साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद के लिए सभी औद्योगिक क्षेत्रकों के साधन भुगतानों का योग ज्ञात करें।

और अंत में : साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय को जोड़कर साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पादन ज्ञात करते हैं।

राष्ट्रीय आय और इसके घटक

(आय विधि)

					निवल अप्रत्यक्ष कर
निवल अप्रत्यक्ष कर				अचल पूंजी का उपभोग	अचल पूंजी का उपभोग
अचल पूंजी का उपभोग	अचल पूंजी का	उपभोग	विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय	विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय	विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय
लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ
ब्याज	ब्याज	ब्याज	ब्याज	ब्याज	ब्याज
लगान	लगान	लगान	लगान	लगान	लगान
स्वनियोजतों की मिश्रित आय	मिश्रित आय	मिश्रित आय	मिश्रित आय	मिश्रित आय	मिश्रित आय
कर्मचारियों का पारिश्रमिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक
बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद	साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद	साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद	साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (राष्ट्रीय आय)	साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	बाजार लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद

चित्र 25.3

टिप्पणियाँ

संख्यात्मक उदाहरण

1. निम्न आंकड़ों से राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए:

		(करोड़ रुपये)
(i)	अचल पूंजी उपभोग	50
(ii)	नियोजकों का सामाजिक सुरक्षा में योगदान	75
(iii)	ब्याज	160
(iv)	निवल अप्रत्यक्ष कर	55
(v)	किराया	130
(vi)	लाभांश	45
(vii)	निगम कर	15
(viii)	अवितरित लाभ	10
(ix)	विदेशों से शुद्ध साधन आय	(−10)
(x)	वेतन व मजदूरी	450

हलः

NPD_{FC} = (x)+(ii)+(iii)+(v)+(vi)+(vii)+(viii)

= 450 + 75 + 160 + 130 + 45 + 15 + 10 = 885 करोड़

NNP_{FC} = NDP_{FC} + (ix)

= 885 + (–10)

= 875 करोड़

हल पर टिप्पणी

(i) चूंकि वेतन मजदूरी तथा नियोजकों का सामाजिक सुरक्षा में अंशदान पृथक रूप से दिया गया है, इन्हें कर्मचारी पारिश्रमिक ज्ञात करने में जोड़ा जाएगा।

(ii) कुल लाभ में लाभांश, अवितरीय लाभ तथा निगम कर, कुल लाभ/ सुरक्षित आय प्राप्त करने के लिए शामिल होते हैं।

(iii) इस प्रश्न में निवल अप्रत्यक्ष कर नहीं पूछा गया है। इसी प्रकार अचल पूंजी उपभोग भी पूछा गया है।

सावधानियां

आय वितरण विधि द्वारा राष्ट्रीय आय के आकलन में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है :

(क) कर्मचारियों के पारिश्रमिक का आकलन करने में सभी नकद एवं वस्तुओं के रूप में दिए जाने वाले हितलाभों को शामिल किया जाना चाहिए।

(ख) ब्याज के आकलन में केवल उत्पादन हेतु ऋणों पर ब्याज को जोड़ना होगा, उपभोग ऋणों का ब्याज हस्तांतरण आय होने के नाते राष्ट्रीय आय का अंग नहीं माना जाएगा।

(ग) उपहार, दान, धर्मार्थ, कर, जुर्माने और लॉटरी के इनाम आदि साधन आय नहीं हैं। ये हस्तांतरण आय हैं। इन्हें भी राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

(घ) पुरानी वस्तुओं की बिक्री से प्राप्त आय चालू वर्ष की उत्पादित आय नहीं है। इसे भी राष्ट्रीय आय में नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

25.4 अंतिम व्यय विधि

व्यय विधि की मदद से हम राष्ट्रीय आय की उसके उपयोग या प्रयोजन की स्थिति में भी गणना कर सकते हैं। यहां हम सकल घरेलू उत्पाद पर बाजार में अंतिम व्यय से आय की गणना करते हैं।

अंतिम वस्तुओं पर किया गया व्यय ही अंतिम व्यय है। अंतिम वस्तुएं वे वस्तुएं हैं, जिनकी मांग उपभोग और निवेश के लिए की जाती है। अंतिम उपभोग और निवेश की मांग अर्थव्यवस्था के चारों घटकों, परिवारों, फर्मों और सरकार और शेष विश्व द्वारा की जाती है।

इस विधि से राष्ट्रीय की गणना में निम्नलिखित कदम सम्मिलित हैं–

प्रथम : अर्थव्यवस्था के सभी घटक समूहों द्वारा अंतिम उत्पादों पर किए गए व्यय का पृथक्-पृथक् अनुमान लगाएं–

(i) निजी अंतिम उपभोग व्यय

(ii) सार्वजनिक अंतिम उपभोग व्यय

(iii) सकल निवेश

(iv) निवल निर्यात (निर्यात-आयात)

उपर्युक्त चारों व्ययों का योगफल हमें बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े देता है।

दूसरे : बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से अचल पूंजी उपभोग (मूल्य ह्रास) और निवल अप्रत्यक्ष करों को घटाकर साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद के आंकड़े प्राप्त करें।

$NDP_{FC} = GDP_{mp}$ − मूल्य ह्रास − निवल अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर–आर्थिक सहायता)

तीसरे : साधन लागत पर निवल घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय जोड़ें। यही योग साधन लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद होता है, जिसे राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

$NNP_{FC} = NDP_{FC}$ + विदेशों से निवल साधन आय

(राष्ट्रीय आय)

राष्ट्रीय आय : (व्यय विधि)

सकल निवेश	− मूल्य ह्रास		
निजी अंतिम उपभोग व्यय		− निवल अप्रत्यक्ष कर	+ विदेशों से निवल साधन आय
सरकारी अंतिम उपभोग व्यय			
निवल निर्यात (निर्यात–आयात)			
GDP_{MP}	NDP_{MP}	NDP_{FC}	NNP_{FC} (राष्ट्रीय आय)

चित्र 25.4

संख्यात्मक उदाहरण

व्यय विधि द्वारा निम्नांकित आंकड़ों से राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए–

मद	(करोड़ रुपये)
(i) व्यक्तिगत उपभोग व्यय	3500
(ii) स्थिर पूंजी उपभोग	50
(iii) शुद्ध स्थिर पूंजी निर्माण	1250

(iv) स्टॉक परिवर्तन	500
(v) निर्यात	400
(vi) आयात	750
(vii) निवल अप्रत्यक्ष कर	40
(viii) सरकारी उपभोग व्यय	1600
(ix) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(−10)
(x) वेतन और मजदूरी	450

हल:

	(करोड़ रुपये)
व्यक्तिगत उपभोग व्यय	3500
+ शुद्ध स्थिर पूंजी निर्माण	1250
+ स्टॉक परिवर्तन	500
+ सरकारी उपभोग व्यय	1600
+ निवल निर्यात (निर्यात−आयात)	−350
बाजार मूल्य पर शुद्ध घरेलू उत्पाद	6500
(−) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर	40
साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद	640
+ विदेशों से शुद्ध साधन आय	(−) 10
साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (राष्ट्रीय आय)	6450

ध्यान दें:

1. चूंकि हमें केवल शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद की साधन लागत पर गणना करने को कहा गया है और शुद्ध स्थिर पूंजी निर्माण पहले से दिया हुआ है, अत: यहां स्थिर पूंजी उपभोग अपेक्षित नहीं है।

2. चूंकि स्थिर पूंजी की मद दी हुई है; सकल घरेलू पूंजी निर्माण (निवेश) ज्ञात करने के लिए स्टॉक परिवर्तन को जोड़ना आवश्यक है।

3. यहां वेतन और मजदूरी को दर्ज करने की आवश्यकता नहीं है।

सावधानियां

व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना में इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

(i) दोहरी गणना से बचने के लिए मध्यवर्ती उत्पादों पर व्यय को नहीं जोड़ना चाहिए।

(ii) उपहार, दान, कर, छात्रवृत्ति आदि पर व्यय को राष्ट्रीय आय में नहीं जोड़ते, क्योंकि ये हस्तांतरण आय हैं।

(iii) पुरानी चीजों की खरीदारी पर व्यय भी वर्तमान आय का हिस्सा नहीं होगा। ये जब पहली बार खरीदी गई थी, उस वर्ष की आय में जुड़ चुकी हैं।

(iv) बांड और कंपनियों के शेयर आदि की खरीद पर व्यय भी राष्ट्रीय आय में नहीं जोड़ा जाएगा, क्योंकि ये केवल वित्तीय आदान-प्रदान होते हैं।

25.5 राष्ट्रीय आय गणना की तीनों विधियों का सामंजस्य

हम तीनों विधियों द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना को निम्न तालिका द्वारा संक्षेप में दिखा सकते हैं–

मूल्य वृद्धि विधि	आय वितरण विधि	अंतिम व्यय विधि
सभी औद्योगिक	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	निजी अंतिम उपभोग व्यय
क्षेत्रकों के बाजार कीमत	+ लगान	+ सरकारी अंतिम उपभोग व्यय,
पर सकल मूल्य वृद्धि	+ ब्याज	+ सकल घरेलू पूंजी निर्माण
का योग	+ लाभ	(सकल निवेश)
	+ मिश्रित आय	
	+ अचल पूंजी उपभोग	
	+ अप्रत्यक्ष कर	+ निवल निर्यात
	– आर्थिक सहायता	
$=GDP_{MP}$	GDP_{MP}	$=GDP_{MP}$
– अचल पूंजी का उपभोग	– अंचल पूंजी का उपभोग	– अचल पूंजी का उपभोग
– अप्रत्यक्ष कर	– अप्रत्यक्ष कर	– अप्रत्यक्ष कर
+ आर्थिक सहायता	+ आर्थिक सहायता	+ आर्थिक सहायता
+ विदेशों से निवल	+ विदेशों से निवल	+ विदेशों से निवल
साधन आय	साधन आय	साधन आय
$=NNP_{FC}$	$=NNP_{FC}$	$=NNP_{FC}$

चित्र 25.5

पाठगत प्रश्न 25.2

रिक्त स्थान भरें–

(तृतीयक, पारिश्रमिक, अंतरण, निवेश, उपभोग)

(i) उपहार, दान, कर आदि .... भुगतान हैं।

(ii) .... व्यय के लिए ऋणों पर ब्याज भुगतान साधन आय नहीं होता।

(iii) गैर-नकद हितलाभ भी कर्मचारियों के .... का हिस्सा होता है।

(iv) एक उत्पादक इकाई द्वारा फर्नीचर के खरीद पर व्यय .... का हिस्सा है।

(v) घरेलू नौकर रखना .... क्षेत्रक का अंग होगा।

25.6 राष्ट्रीय उत्पाद और दूसरे योग

हम पढ़ चुके हैं कि घरेलू सीमा में समस्त उत्पादक इकाइयों द्वारा निवल मूल्य वृद्धि के योगों को साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद कहा जाता (NDP_{FC}) है। एक वर्ष में समस्त अर्जित आय एक गृहस्थ उपभोक्ता को प्राप्त नहीं होती। सरकारी विभागीय वाणिज्य उद्यम द्वारा संपत्ति और उद्यमशीलता से अर्जित आय सरकार अपने पास रखती है। दूसरे, भविष्य के विस्तार के लिए सरकार के गैर-विभागीय उद्यम अपने लाभ का एक भाग सुरक्षित रखते हैं। यह राशि वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होती। इसलिए ये दोनों को NDP_{FC} में से घटा दिया जाता है। यह आय निजी क्षेत्र के लिए होती है। इस प्रकार यदि इन दोनों रकमों को NDP_{FC} से घटा दिया जाए तो हमें निजी क्षेत्र को प्राप्त NDP_{FC} ज्ञात हो सकती है।

निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से प्रात्त आय = NDP_{FC} – उद्यमशीलता तथा पूंजी से सरकारी प्रशासन को प्राप्त आय तथा गैर-विभागीय उद्यम की बचतें।

(i) निजी आय : घरेलू सीमा में और विदेशों में निजी उद्यम या कर्मचारियों (निजी क्षेत्र के साधन स्वामी) द्वारा अर्जित आय निजी आय में जोड़ी जाती है। सरकार या शेष विश्व से चालू हस्तांतरण भी निजी आय में शामिल होते हैं।

निजी आय = निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय + विदेशों से निवल साधन आय + राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज + सरकार से चालू हस्तांतरण + शेष विश्व से अन्य शुद्ध हस्तांतरण।

(ii) व्यक्तिगत आय : किसी व्यक्ति या परिवार को सभी साधनों से प्राप्त चालू आय इसमें शामिल होती है। उसमें से अवितरित लाभ तथा निगम कर, जो उद्यम द्वारा देय होते हैं, को घटा दिया जाता है।

व्यक्तिगत आय = निजी आय – निजी निगम क्षेत्र की बचतें (अवितरित लाभ) – निगम कर।

(iii) व्यक्तिगत प्रायोज्य आय : एक गृहस्थ अपनी समस्त व्यक्तिगत आय को खर्च नहीं करता। इसमें से सरकार आयकर और दूसरे विविध करों, जैसे–शिक्षा कर, अग्नि कर, स्वच्छता

टिप्पणियाँ

करके रूप में कुछ भाग ले लेती है। व्यक्तिगत प्रायोज्य आय के लिए व्यक्तिगत आय में से इन करों को घटा दिया जाता है।

व्यक्तिगत प्रायोज्य आय = व्यक्तिगत आय – परिवार द्वारा प्रदत्त प्रत्यक्ष कर – सरकार को प्रदत्त विविध कर

व्यक्तिगत प्रायोजित आय : व्यक्तिगत आय, जो सभी साधनों से प्राप्त होती है, से करों को घटाकर जो बाकी रहती है, उसे स्वेच्छा से व्यय किया जाता है।

25.7 राष्ट्रीय प्रायोज्य आय (निवल और सकल)

समस्त देश को स्वेच्छा से व्यय करने हेतु प्राप्त आय को राष्ट्रीय प्रायोज्य आय के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। इसमें अर्जित आय और हस्तांतरण आय दो भागों में सम्मिलित होती हैं–

निवल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय $= NNP_{MP}$ + शेष विश्व से चालू हस्तांतरण

या $NNP_{FC} + NIT +$ शेष विश्व से चालू हस्तांतरण

सकल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय $= GNP_{MP} +$ शेष विश्व से चालू हस्तांतरण

संख्यात्मक उदाहरण (राष्ट्रीय आय और उसकी गणना तथा संबंधित समुच्चय)

उदाहरण 1 :

नीचे दिए गए आंकड़ों से निजी आय ज्ञात कीजिए:

	(करोड़ रुपये)
(i) साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद	2000
(ii) सरकार को संपत्ति और उद्यमशीलता से होने वाली आय	100
(iii) गैर विभागीय उद्यम की बचत	20
(iv) राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज	5
(v) विदेशों से शुद्ध साधन आय	(–) 10
(vi) सरकार से शुद्ध चालू हस्तांतरण	15
(vii) शेष विश्व से शुद्ध चालू हस्तांतरण	25

हल :

निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से आय

$= NDP_{FC} - (ii) - (iii)$

$= 2000 - 100 - 20$

= 1880 करोड़ रुपये

निजी आय – निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से आय

$+ (iv) + (v) + (vi) + (vii)$

$= 1880 + 5 + (-)10 + 15 + 25$

= 1915 करोड़

उदाहरण 2 :

गणना करो (क) व्यक्तिगत आय (ख) व्यक्तिगत प्रायोज्य आय

	(करोड़ रुपये)
(i) निजी आय	1915
(ii) घरेलू उत्पाद से प्राप्त निजी क्षेत्र को आय	1880
(iii) विदेश से निवल साधन आय	(–) 10
(iv) निगम कर	25
(v) निजी निगम क्षेत्र की बचतें	15
(vi) ग्रहस्थों द्वारा अदा किए जाने वाले प्रत्यक्ष कर	25
(vii) सरकारी प्रशासनिक विभाग अन्य विविध प्राप्तियां	5

हल:

(क) व्यक्तिगत आय = निजी आय – (iv) – (v)

= 1915 – 25 – 15

= 1875 करोड़ रुपये

(ख) व्यक्तिगत प्रायोज्य आय

= व्यक्तिगत आय – (vi) – (vii)

= 1875 – 25 – 5

= 1845 करोड़ रुपये

उदाहरण 3 :

गणना कीजिए (क) सकल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय (ख) नवल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय–

	(करोड़ रुपये)
(i) NNP_{FC}	3000
(ii) सरकार से निवल चालू हस्तांतरण	20
(iii) शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण	25
(iv) विशुद्ध अप्रत्यक्ष कर	50
(v) मूल्य ह्रास	40

हल :

(क) सकल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय

= GNP_{MP} + शेष विश्व से विशुद्ध चालू हस्तांतरण

= [(i) + (v) + (iv)] + (iii)

= 3000 + 40 + 50 + 25

= 3115 करोड़ रुपये

(ख) निवल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय

= (i) + शेष विश्व से विशुद्ध चालू हस्तांतरण

= [(i) + (iv)] + (iii)

= 3000 + 50 + 25

= 3075 करोड़ रुपये

आपने क्या सीखा

- राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह की तीन अवस्थाएं होती हैं। उन्हीं के अनुरूप राष्ट्रीय आय की गणना की तीन विधियां हैं–उत्पादन या मूल्य वृद्धि विधि, आय वितरण विधि और अंतिम व्यय विधि।
- किसी देश की राष्ट्रीय आय आकलन में पहला काम उत्पादक इकाइयों का औद्योगिक क्षेत्रकों में विभाजन है। प्राथमिक क्षेत्रक में प्राकृतिक साधनों का विदोहन करने वाली द्वितीयक

इकाई शामिल होती हैं। क्षेत्रक एक वस्तु का किसी अन्य में प्रत्यावर्तन करता है और उत्पादक इकाइयां सेवा क्षेत्र में सेवाएं उत्पन्न करती हैं।

- मूल्य वृद्धि विधि में मुख्य कदम ये हैं–सभी क्षेत्रकों द्वारा सृजित NVA_{FC} का अनुमान लगा और उनके योग से NDP_{FC} ज्ञात करते हैं। NNP_{FC} को प्राप्त करने के लिए NDP_{FC} में विदेशों से प्राप्त निवल आय को जोड़ते हैं।
- वितरण विधि में मुख्य कदम ये हैं–प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा किए गए साधन आय भुगतानों को जोड़कर NDP_{FC} प्राप्त करते हैं। इसमें विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय जोड़ने से NNP_{FC} का अनुमान मिल जाता है।
- अंतिम व्यय विधि में मुख्य कदम इस प्रकार हैं–उपभोग और निवेश पर अंतिम व्यय के योग से GDP_{FC} प्राप्त करते हैं। इसमें से अचल पूंजी उपभोग और अप्रत्यक्ष कर घटाने तथा आर्थिक सहायता जोड़ने से NDP_{FC} मिल जाती हैं। NDP_{FC} में विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय का योग कर हमें NNP_{FC} प्राप्त होती है।

पाठांत प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह की तीन अवस्थाएं समझाइए।
2. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों के स्वरूप और कार्य को समझाइए।
3. मूल्य वृद्धि विधि से राष्ट्रीय आय के मापन के सोपानों को समझाइए।
4. मूल्य वृद्धि विधि से राष्ट्रीय आय की गणना में क्या मुख्य सावधानियां आवश्यक हैं?
5. आय वितरण विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के सोपनों को समझाइए।
6. आय वितरण विधि से राष्ट्रीय आय की गणना में क्या मुख्य सावधानियां आवश्यक हैं?
7. व्यय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के मुख्य सोपान क्या हैं?
8. अंतिम व्यय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना में क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?
9. निम्नांकित आंकड़ों से साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि का आकलन कीजिए और बताइए कि यह साधन आय के जोड़ के बराबर है–

	(करोड़ रुपये)
(i) विक्रय	9600
(ii) स्टॉक में वृद्धि	2080
(iii) मध्यवर्ती उपभोग	2370

(iv) मूल्य ह्रास	450
(v) वेतन व मजदूरी	5400
(vi) ब्याज	250
(vii) किराया	750
(viii) लाभ	2150
(ix) निवल अप्रत्यक्ष कर	310

10. नीचे दिए गए आंकड़ों के आधार पर किसी उद्यम की साधन लागत पर निवल मूल्य वृद्धि ज्ञात कीजिए–

	(करोड़ रुपये)
(i) अचल पूंजी उपभोग	10
(ii) आर्थिक सहायता	5
(iii) अप्रत्यक्ष कर	25
(iv) अन्य उत्पादक इकाइयों से माल व सेवाओं का क्रय	75
(v) उत्पादन मूल्य	125

(उत्तर = 70 करोड़ रुपये)

11. निम्नलिखित आंकड़ों से फर्म 'क' और 'ख' द्वारा की गई मूल्य वृद्धि की गणना कीजिए–

	लाख रुपये में
(i) फर्म क से फर्म ख का क्रय	40
(ii) फर्म ख का विक्रय	80
(iii) फर्म ख का आयात	10
(iv) फर्म ख का अदा किया गया किराया	5
(v) फर्म ख का प्रारंभिक स्टॉक	15
(vi) फर्म ख का बंद स्टॉक	20
(vii) फर्म क का फर्म ख से क्रय	20
(viii) फर्म क का बंद स्टॉक	20
(ix) फर्म का प्रारंभिक स्टॉक	10

12. निम्नलिखित आंकड़ों से गणना कीजिए–

(i) राष्ट्रीय आय

(ii) निजी आय

(iii) व्यक्तिगत आय

(iv) व्यक्तिगत प्रायोज्य आय

(v) सकल राष्ट्रीय प्रायोज्य आय

	(करोड़ रुपये)
(i) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1000
(ii) स्वनियोजितों की मिश्रित आय	2500
(iii) मूल्य ह्रास	50
(iv) विदेश से निवल साधन आय	20
(v) किराया	200
(vi) ब्याज	100
(vii) लाभ	500
(viii) निवल अप्रत्यक्ष कर	300
(ix) राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज	70
(x) सरकार से चालू हस्तांतरण	60
(xi) शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण	70
(xii) निगम कर	30
(xiii) निजी निगम क्षेत्र की बचतें	20
(xiv) गृहस्थों द्वारा दिया गया प्रत्यक्ष कर	15

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1

(क) प्राथमिक क्षेत्रक (ख) औद्योगिक क्षेत्रक

(ग) स्व-उपभोग हेतु उत्पादन (घ) तृतीयक

25.2

(क) अंतरण (ख) उपभोग (ग) पारिश्रमिक

(घ) निवेश (ङ) तृतीयक

पाठगत प्रश्न

25.2

आय विधि के अनुसार, निम्नलिखित में कौन राष्ट्रीय आय में सम्मिलित होगा और क्यों?

(क) एक दंत चिकित्सक की आय

(ख) दो कक्ष वाले भवन से प्राप्त किराया

(ग) एक पेंटर द्वारा अपने स्वयं के कक्ष को पेंट करने में सेवाएं।

(घ) एक विद्यार्थी द्वारा अपने पिता से प्राप्त मासिक जेब-खर्च।

25.3

व्यय विधि के अनुसार, निम्नलिखित में कौन GDP_{mp} में सम्मिलित होंगे और क्यों?

(क) एक शेयर का क्रय

(ख) वर्तमान मकान में एक नए कक्ष का निर्माण

(ग) मशीनों का क्रय

(द) एक विद्यार्थी द्वारा प्राप्त राशि जो वह अपने द्वारा खरीदी गई पुस्तक को, पुस्तक विक्रेता को बेचकर प्राप्त करता है।

25.4

(अ) सम्मिलित – यह अंतिम सेवा के लिए भुगतान है।

(ब) सम्मिलित – यह किराएदार द्वारा प्रयुक्त अंतिम सेवा के लिए भुगतान है

(स) सम्मिलित नहीं – यह एक बाजार सौदा नहीं है।

(द) सम्मिलित नहीं – यह एक हस्तांतरण भुगतान है।

25.5

(अ) सम्मिलित नहीं – यह मात्र एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को स्वामित्व का हस्तांतरण है।

(ब) सम्मिलित – यह सकल निवेश की एक भाग है।

(स) सम्मिलित – यह सकल निवेश की एक भाग है।

(द) सम्मिलित नहीं – यह एक पुराना सौदा है और इसके मूल्य की इसके उत्पादन के समय गणना पहले ही की जा चुकी है।